अव्यक्त इशारे

प्रतिज्ञा द्वारा अपने सम्पूर्ण रूप से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनो।

1) अभी समय बहुत थोड़ा है और काम बहुत करना है इसलिए अपने आपसे दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि आज से यह पुराने संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन होने नहीं देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब प्रत्यक्षफल मिलेगा, परमात्म प्रत्यक्षता होगी।
2) कोई भी प्रतिज्ञा करते हैं तो जल को साक्षी रखकर करते हैं। तो बाप भी बच्चों से यह जल की लोटी चढ़वाते हैं, प्रतिज्ञा करो कि आज से क्यों की क्यू को खत्म करेंगे क्योंकि इस क्यों शब्द से ही व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। क्यों शब्द से कल्पना करना शुरू हो जाता है। तो जब यह क्यों शब्द खत्म हो जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रह सकेंगे।
3) पाण्डवों के लिए प्रसिद्ध है कि वह कभी भी प्रतिज्ञा से हिलते नहीं थे। आप सबकी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता को लायेगी। तो सभी को तीन प्रतिज्ञायें करनी है: **1-** सहनशीलता का बल अपने में धारण करेंगे। **2-** व्यर्थ पर फुलस्टाप लगायेंगे। और **3-** आसुरी संस्कारों पर पहरा देंगे।
4) पुरुषार्थ के स्पीड को ढीला करने वाली मुख्य बात है - अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में लाना और चित्त में रखना इसलिए प्रतिज्ञा करो कि पुरानी बीती हुई बातों को कभी भी स्मृति में नहीं लायेंगे। बीती हुई बातें ऐसे महसूस हों जैसे बहुत पुरानी कोई जन्म की बात है, तब पुरुषार्थ की स्पीड तेज होगी।
5) प्रतिज्ञा करो कि कैसी भी समस्या आये, कोई भी कारण बने लेकिन हम और कोई पर भी बलि नहीं चढ़ेंगे। जैसे बीज बोने के बाद उसको जल दिया जाता है तब वृक्ष रूप में फलीभूत होता है। इस रीति यह भी जो प्रतिज्ञा की है उसको पूर्ण करने के लिए संग का जल भी चाहिए तो अपनी हिम्मत भी चाहिए।
6) कोई भी कार्य के लिए पहले प्रतिज्ञा होती है फिर प्लैन होता है। फिर होता है प्रैक्टिकल। और प्रैक्टिकल के बाद फिर होती है चेकिंग कि यह हुआ, यह नहीं हुआ। चेकिंग के बाद जो बीती सो बीती, आगे उन्नति का साधन रखते हैं। तो पुरुषार्थ में जो भी नुकसानकारक बातें हैं, उन्हें समेटने और समाने की प्रतिज्ञा करो फिर उसको चेक भी करो।
7) स्वयं में परिपक़्वता लाने के लिए अपने आपसे प्रतिज्ञा करो। सदा यह स्लोगन स्मृति में रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं'। कब कर लेंगे, ऐसा नहीं सोचो। अभी बनकर दिखाओ। जितना प्रतिज्ञा करेंगे उतनी परिपक़्वता वा हिम्मत आयेगी और फिर सहयोग भी मिलेगा।
8) रोज़ इस प्रतिज्ञा का तिलक लगाओ कि हर बात में पास विद आनर बनकर दिखायेंगे। पास विद आनर अर्थात् संकल्पों में भी सजा न खायें। वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क की बात छोड़ दो। वह तो मोटी बात है लेकिन संकल्पों में भी न उलझे, न मूंझें - ऐसी प्रतिज्ञा

करने वाले हिम्मतवान बनो।

9) प्रतिज्ञा द्वारा पुरानी बातों को, पुराने संस्कारों को ऐसा परिवर्तन में लाओ, जैसे जन्म परिवर्तन होने के बाद पुराने जन्म की बातें भूल जाती हैं। ऐसा पुराने संस्कारों को भस्म कर दो, उन अस्थियों को भी सम्पूर्ण स्थिति के सागर में समा दो।

10) सम्पूर्ण स्वरूप को धारण करने की अपने आपसे प्रतिज्ञा करो । प्रयत्न नहीं। अब प्रयत्न का समय गया। अब प्रतिज्ञा और सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त समझने से कभी भी हार नहीं खायेंगे।

11) जो प्रतिज्ञा की जाती है उसको पूर्ण करने के लिए पावर भी चाहिए। कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। भल सारे विश्व की आत्माएं मिलकर प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बन करके ही दिखायेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का ही यादगार अचलघर है।

12) जिस बात की फोर्स से प्रतिज्ञा की जाती है वह प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल रूप ले लेती है क्योंकि उसमें विल पावर होती है। जैसे स्थूल कार्य कितना भी ज्यादा हो लेकिन प्रतिज्ञा करने से कर लेते हो। अगर ढीला विचार होगा, न करने का ख्याल होगा तो कभी पूरा नहीं करेंगे। फिर बहाने भी बहुत बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करने से फिर समय भी निकल आता है और बहाने भी निकल जाते हैं।

13) परमात्म प्रत्यक्षता के लिए अब समय प्रमाण वा बाप की पढ़ाई प्रमाण, विश्व के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनाओ। कोई भी देखे तो अनुभव करे कि इन्हें पढ़ाने वाला वा बनाने वाला स्वयं सर्वशक्तिवान बाप है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण ही बाप को प्रत्यक्ष करने का सहज और श्रेष्ठ साधन है।

14) प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसी स्मृति में रहना। जब भी कोई आपको देखे तो देखते-देखते बाप की स्मृति स्वत: आ जाए, हरेक के दिल से निकले कि कमाल है बनाने वाले की तो बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा। बाप आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई दे और आप गुप्त हो जाओ। अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है, फिर हरेक की दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणणान करते हुए सुनेंगे।

15) विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफलता का साधन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप की प्रत्यक्षता है। जो बोलो वह देखें। बोलते हो कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मायाजीत, रहमदिल हैं, रूहानी सेवाधारी हैं। तो जो बोलते हो वह प्रैक्टिकल स्वरूप में हो।

16) जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। तो आप हर बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हों के नयनों में कोई विशेषता है। साधारण नहीं अनुभव करें, अलौकिक हैं। उन्हों के मन में

क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि आपको ऐसा बनाने वाला कौन? तो अपनी स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो।

17) आप सबका पहला-पहला व्रत वा प्रतिज्ञा है कि मन वाणी और कर्म में पवित्र रहेंगे। एक बाप दूसरा ना कोई, यह व्रत सभी ने लिया है। तो सदैव इस व्रत को स्मृति में रखो। स्मृति से कभी वृत्ति चंचल नहीं होगी। प्रवृत्ति, परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नों वश नहीं होंगे।

18) अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि छोटी-छोटी बातों में मेहनत नहीं लेंगे, किसी भी माया के आकर्षित रुप में धोखा नहीं खायेंगे। सदैव यही स्मृति रखो कि हम दुःख हर्ता सुख कर्ता के बच्चे हैं। किसके भी दुःख को हल्का करने वाले स्वयं कभी भी एक सेकेण्ड के लिए भी संकल्प वा स्वपन्न में भी दुःख की लहर में नहीं आयेंगे।

19) प्रतिज्ञा करो कि कभी किसी रुप में भी, किसी भी परिस्थिति में माया से हारेंगे नहीं लेकिन लड़ेंगे और विजयी बनेंगे। मायाजीत बनकर दिखायेंगे। 2- अपने आपको सतोप्रधान बनाकर दिखायेंगे। 3- विस्मृति के संस्कारों को सदा के लिए विदाई देंगे। 4- सदा हिम्मत हुल्लास में रहेंगे और दूसरों को भी हिम्मत दिलायेंगे।

20) जब से जन्म लिया है तब से प्रतिज्ञा की है कि मन अर्थात् संकल्प, समय और कर्म जो भी करेंगे वह बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। अगर ईश्वरीय सेवा की बजाए कहाँ संकल्प वा समय वा तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको सम्पूर्ण वफादार नहीं कह सकते इसलिए सम्पूर्ण वफादार बनो।

21) आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि वया इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसी भी पावन आत्मायें कोई बन सकती हैं! तो आप उन्हों को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकती हैं और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज्यादा देखने चाहते हैं तो चारों ओर हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी और बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा।

22) बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञायें की हैं लेकिन अब से लेकर सिवाए मणी के और कुछ नहीं देखेंगे, यह प्रतिज्ञा करो तब खुद ही माला के मणी बन करके सारी सृष्टि के बीच चमकेंगे। जब ऐसी प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्षता होगी। अब प्रयत्न करने का समय गया। अब तो प्रतिज्ञा और अपने सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त बनाओ तो प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जायेगा।

23) प्रत्यक्षता करने के लिए अब लास्ट व लास्ट सो फास्ट पुरूषार्थ है - प्रतिज्ञा। कोई भी बात की प्रतिज्ञा करना कि यह करना है, यह नहीं करना है। संकल्प किया और स्वरूप हुआ, ऐसी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। तो प्रतिज्ञा से अपने को और बाप को प्रख्यात करो।

24) सम्पूर्ण प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाने के लिए सिर्फ यही बात विशेष अन्डरलाइन करनी है - प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा-दोनों का बैलेन्स सर्व आत्माओं को बापदादा द्वारा ब्लैसिंग प्राप्त होने का आधार है तो प्रतिज्ञा करो कि कभी भी किसी भी हालत में हार नहीं खायेंगे, परमात्म गले का हार, श्रंगार, विजयी रत्न बनेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करना अर्थात् प्रत्यक्ष सबूत देना ही परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है।

25) परमात्म प्रत्यक्षता के लिए अब प्रतिज्ञा करो कि वेस्ट खत्म करेंगे, बेस्ट बनेंगे। जब कोई परीक्षा आये तो प्रतिज्ञा याद करो। तो जब सभी ऐसे बेस्ट बन जायेंगे तब ही प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। प्रत्यक्षता का पर्दा खुलने के पहले आप मूर्तियां पूरी तैयार होनी चाहिए।

26) अब मैदान पर प्रत्यक्ष होने का समय है। शूरवीर, शक्तिरूप बनकर प्रत्यक्ष रुप में सामने आओ। जब इस रूप में प्रत्यक्ष होंगे तब बाप और बच्चों की प्रत्यक्षता होगी। जितना प्रत्यक्ष होंगे उतनी प्रत्यक्षता होगी। तो बाप को प्रख्यात करने के लिए प्रत्यक्ष होना पड़े, इसके लिए अपनी कमजोरियों को विदाई दो तब सृष्टि के कल्याणकारी बन सकेंगे।

27) प्रत्यक्षता के पहले विश्व की इस विशाल स्टेज पर हर वर्ग वाला पार्टधारी प्रत्यक्ष होना चाहिए। हर वर्ग का अर्थ ही है - विश्व की सर्व आत्माओं के वैराइटी वृक्ष का संगठन रूप। कोई भी वर्ग रह न जाए जो उल्हना दे कि हमें तो सन्देश नहीं मिला इसलिए नेता से लेकर झुग्गी-झोपड़ी तक जो भी वर्ग हैं । पढ़े हुए सबसे टॉप साइन्सदान और फिर जो अनपढ़ हैं, उन सबको सन्देश देकर अपने जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा समीप सम्बन्ध में लाने की सेवा करो तब प्रत्यक्षता होगी।

28) अपने सम्पूर्ण स्वरूप को प्रत्यक्ष करने के लिए जो कुछ सुना है, उसको गहराई से सोच कर अपनी रग-रग में समाकर अपनी चलन से प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ। जो कुछ चल रहा है, जो कर रहे हो वह ड्रामानुसार बहुत अच्छा है लेकिन अभी समय प्रमाण, समीपता के प्रमाण अपने सम्पूर्ण शक्ति रुप का प्रभाव दूसरों पर डालो तब ही अंतिम प्रत्यक्षता समीप ला सकेंगे।